केवल दिव्य प्रेम ही
परमात्मा तक पहुँचकर
पूर्णता की उपलब्धि करवा सकता है।
ऐसे ही दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति
एक दिव्य चेतना के द्वारा
इस ग्रंथ में की गई
जिसका नाम है

प्रेम ग्रंथ

लेखक :- नारायण प्रेम साँई (ओहम्मो)

प्रस्तावना

सबसे लम्बे समय तक इस नोटबुक ने मेंरा सानिध्य पाया है। 26/6/2014 से लेकर आज 21/11/2014 तक यह मेरे बिस्तर के पास रखी रही । पिछले 2-4 पन्ने खाली हैं। जब-जब विचार प्रेम के आते रहे उसे लिखता रहा। कुछ पढ़ा तो उसे भी थोड़ा अपना संपुट मिलाकर लिखता रहा। अब जब पूर्ण हो चूकि है - तब भी इस नोटबुक को छोड़ने का मन नहीं करता। इसे लिखने में कुछ राते जागा हूँ। सपनों के बिच खो गया हूँ। उनके अस्तित्व को महसूस किया हूँ।

इत्तफाक ही कहो - इसके title पर भी गोपी लिखा है। यह गोपी बन मेरे साथ रही है .....इसने निःशब्दता के आंगन में मुझे खेलने में सहयोग किया है। इस कृति को शायद जिंदगी में मैं भूल नहीं पाउंगा।

समय 21/11/14 (8:45 pm) □

एक तरफ ISIS बहूत तेजी से अत्यंत धनवान आतंकी संगठन बनकर बहुत तेजी से ऊभर रहा है।

क्या कुछ ऐसा नहीं हो सकता की हम प्रेमवाद को तेजी से विश्व में फैलाने के लिये IMLP का गठन करें और सबको इससे जोड़ें | हम स्वयं भी सीखें "ART OF LOVING" ! और दुनिया को भी यह सिखाएँ ?

मुझे तुलसीदास और विलियम कार्टराइट की poem की पंक्तिया याद आ रही हैं -

राम ही केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु कोई जाननिहारा ||
हरि व्यापकु सर्वत्र समाना , प्रेम ते प्रकट हो हिं मैं जाना ||

(रामचरितमानस)

when you love me, and i love you...
Then both of us were born a new.

विलियम कार्टराइट

- अल्होमिस्टको

मैं पुलकित आनंदित रोमांचित तेरे दर्शन से !

जैसा भाए तुझको, वैसा भेष बनाऊँ....

जैसा भाए तुझको, वैसा गीत मैं गाऊँ
जैसा भाए तुझको, वैसा घर मैं सजाऊँ
जैसा भाए तुझको, वैसा आंगन मैं सजाऊँ
तुम साथ रहो मेरे – तो,

होगी मधुमय सुप्रभात...
मधुमय दिवस
मधुमय रजनी

मधुमय होंगे वो सारे क्षण !

तुम्हारे साथ होगा मेरा मधुमय जिवन !!

ऋतुएँ भी होंगी मधुमय...

तुम्हारे साथ....तुम्हारे पास है सब मधुमय...

तुम मधुमय हो....

लौ बनकर जलती हैं यादें तेरी

मन के अंधेरे में ऊजाला करती,
मैं मोम बनकर मानो पिघल रहा हूँ
मेरे एकांत में होता है साथ तेरा,
मेरे कंपन में, रोमांच में है तू -
मेरी धड़कन का संगीत है तू -

फिक्र नहीं मुझे कि मंजिल कितनी दूर है ? रास्ता कितना खराब है !
पर, तू साथ है मेरे, तो कोई गम नहीं !!

खुश हूँ, तेरी यादों की दौलत को पाकर !

आतुर हूँ, बेताब हूँ, प्रतीक्षारत हूँ.....
तेरे सुन्दर मुस्कुराते मुखारविन्द को देखने के लिए .....

आतंक को फैलने के लिए, जीवन लगा देनेवाले आतंकवादी.....
तो, प्रेम को फैलाने के लिए, जीवन लगानेवाले प्रेमवादी !!
तो – हाँ, मैं प्रेमवादी हूँ ! प्रेमवाद की शिक्षा देता हूँ|
प्रेमवाद को फैलाता हूँ| प्रेमवाद से जुड़ा हूँ –
प्रेमवाद को दुनिया में फैलाना चाहता हूँ|
मैं अपील करता हूँ सबसे कि प्रेमवाद से जुड़ो....
सबको जोड़ो... दुनिया में प्रेमवाद फैलाओ....
अपने जीवन को समर्पित करो प्रेमवाद के लिए और गर्व महसूस करो !
प्रेमवाद – जिंदाबाद | प्रेमवाद अमर रहे !!
प्रेमवादी अमर रहें !!! प्रेमवादी आगे बढ़ो – हम उनके साथ हैं|
प्रेमवादी दुनिया बदलो हम उनके साथ हैं|
प्रेमवाद – जिंदाबाद .....जिंदाबाद .....

जो अच्छा लगता है मुझे, जो अच्छा लगता है तुझे....,
चलो, आओ – हम कमिटमेंट करें –
जीवन में, वह सब करें – एक दूजे से –
दिल खोलकर ..... एक्सचेंज !

मैं कमिटेड हूँ, समर्पित भाव से ....
तुम्हें निष्कपट प्रेम करने के लिए !!

गिनिस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड का नाम तो आपने सुना होगा,
मैं तो उसकी कल्पना करनेमात्र से रोमांचित होता हूँ
जिसका नाम हो सकता है ग्रेट बुक ऑफ वर्ल्ड लवर्स.....
डिवाइन लवर्स..... येस, वी आर दैट|

१६/१२/२०१४

ॐ आनंद ॐ मंगल

MY CONCERN

MY NOTES –

जिसमें मेरा प्रेम, मेरी संवेदनायें, भावनायें
मेरी सोच, मेरा दृष्टिकोण, मेरा मंतव्य,
मेरी विचारधारा, मेरा खुला मन – बिना पूर्वाग्रह का –
एकदम निष्कपट, निर्दोष अभिव्यक्त हुआ है |

'ओहम्मो'
- नारायण साँई

मैं,
प्रेम को उड़ेलूँ तुम पर .....
प्रेम में नहाऊँ और नहलाऊँ.....
प्रेम से देखूँ तुमको, अपना प्रेमरूप दिखलाऊँ.....
प्रेम में डूबूँ ऐसा कि प्रेमरूप हो जाऊँ.....
प्रेम को ध्याऊँ ... मानूं प्रेम को प्रेमाकार हो जाऊँ....
प्रेमानंद में जी भर - भर के प्रेमोत्सव मनाऊँ
प्रेमवाद को फैलाकर जग में जीवन सफल बनाऊँ.....

मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे बिना बोले मैं तुम्हारी आवश्यकताओं को समझूँ और उसे पूर्ण करूँ ! मैं इश्वर से यह शक्ति मांगता हूँ कि मुझे वह ताकत दे जो तुम्हारे हदय को समझ सके !

तुम्हारी भावनायें, पीड़ायें, वेदनायें, संवेदनायें – मेरा हदय समझ सके – सदैव – ऐसा मैं चाहता हूँ | इसमें तुम्हारा सहयोग भी मुझे अपेक्षित है | तुम्हारी आशाएं और तमाम आकांक्षाएं मेरे द्वारा सदैव पूर्ण हों ऐसा मैं चाहता हूँ – ईश्वर से मांगता हूँ कि उसके लिए मुझे बल प्रदान करे व उचित परिस्थितियों का निर्माण करे !

०२/०७/२०१४ – २:३० am

ईश्वर शक्ति दे हमें कि हम एक दूसरे को परस्पर समझ सकें !
हमें परस्पर एक-दूसरे के प्रति कभी भी द्वेष-इर्ष्या-घृणा न हो |
हो तो सिर्फ एक दूसरे की उन्नति – प्रेम – सद्भाव और
हदय को समझ सकने की ताकत |

मेरा हदय तुम्हारे प्रति सदैव
मधुरता का अहसास करता रहे !
दुनिया की कोई ताकत कभी भी
हमारे बीच खाई या दिवार न बने ,
मैं ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता रहता हूँ !

०२/०७/२०१४

मेरा जीवन एक माला है – जिसमें हर धड़कन एक-एक मनका है | उन मनकों में कई बार तुम्हारा नाम चलता है | मेरे बिना प्रयास के सहज में नाम के साथ अनायास तुम्हारी यादों में खोया जाता है |

मैं यही समझता हूँ कि यही ईश्वर चाहता है - तभी ये होता है | वरना, अपनी मर्जी से कहाँ कुछ होता है | कहते हैं न कि उसकी मर्जी के बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता तो ये तो बहुत बड़ी बात हो रही है |

स्नेह के सुहावने सपनों को यादों के सहारे मन के झरोखे से देखा करता हूँ |
क्या ऐसा दर्शन तुम्हें भी होता है ?

०२/०७/२०१४

उगते प्रभात में, संध्या की गोद में जीवन जीना सीख लो |
चन्द्रमा की चांदनी, औ सूरज की रोशनी में जीवन जीना सीख लो |
जन्म दिया है उस प्रभु ने - हँसने व खेलने,
दूसरों को हँसाने और दुखों को भुलाने |
हँसते हँसते अनमोल यह जिंदगी जीना सीख लो |
प्रेम की सुवास पाओ फूलों के साथ रे,
जीवन की पगडंडी पर पकड़ लो सज्जनों का हाथ रे |
दुनिया के सुख-दुःख को पलभर में भूलना सीख लो |
क्षणभंगुर सी जिंदगी में हरि के गीत गाना सीख लो, मस्त रहना सीख लो |

०२/०७/२०१४

हमारे बीच एक प्रेम की कड़ी है – जिसने हमें जोड़कर रखा है | तन कितना ही दूर हो पर इस कड़ी ने हमें स्नेह से बाँध रखा है | यह बंधन दिव्य है, पवित्र है | ये अटूट रहे, अक्षुण्ण रहे – ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करते रहो | यही उससे मांगो | मांगने जैसी यही चीज है | बाकी का तो अपने आप मिलेगा |

न आह निकलती न वाह छलकती |
मेरे शांत हृदय में तेरे स्नेह की वर्षा बरसती ||

यूँ ही सदा मुस्कुराते रहना – मुझे देखकर |
मैं यही चाहता हूँ |
ये मुस्कराहट - मुझे मेवा मिठाई से अधिक भाति है |
तुम्हारा ऐसा मुस्कुराना ही भाता है |
मुस्कुराते हो तुम तृप्त होता हूँ मैं |

ऐ ईश्वर ! तू उन सबका दुःख दूर कर, जो मंदिर और तीर्थों में जाते हैं |
ओ मेरे मालिक ! तू सबको खैरियत दे, जो तेरे लिए रोजा करते हैं |
उनको तू अमन चैन दे, दिल में प्यार मोहब्बत दे |
मेरे रब ! जो तेरी बंदगी करते हैं उनको सुख-शांति दे |

रोटी, कपड़ा, मकान, नींद से भी अधिक मनुष्य को जीने के लिए अपनत्व का अहसास चाहिए | हृदय को समझ सकनेवाला शख्स चाहिए | काश ! हम परस्पर एक दूसरे के दिल दिमाग को समझते रहें तो आजीवन सुख-शांति व सुकून का विलक्षण अनुभव होता रहेगा, जिसे दिव्य मधुर जीवन कहा है – वो प्राप्त होगा |

२९/०७/२०१४ – ८:०० pm

मैं तुझमें, तू मुझमें |
सदा से थे, हैं, रहेंगे | निश्चित |
तभी तो हम मिले हैं – एक दूजे से |
वरना तू कहाँ, मैं कहाँ !
काश ! अवसर आए –
एकत्व का ! उसी की प्रतीक्षा में !

मौसम का मिजाज परख रहा हूँ –
हमारे मिजाज में तो हम हैं ही –
मैं तेरे मिजाज में – तू मेरे –
अब, इंतजार है – मिजाज सच हो जाए |

हृदय चाहता है तेरा – आलिंगन | मधुर मिलन |
कब होगा ? कह दो ! जिसमें फिर कभी वियोग का डर न हो !

विरह हुआ असह्य.....मन हुआ बेचैन.....
हाय ! कब होंगे दीदार..... पहले इसके लिए तरसाया ....
जब हुए दीदार तो तुमने – मिलन हेतु तड़पाया !
जब दोगे मिलन अपना, तब वियोग का भय देकर
करोगे अलविदा ! ओ साजन ! ओ सजनी !
तुम्हारा दर्द न जाने कोय ! यह मर्म न समझे कोय !

दिल की भाषा, नयन देखकर समझे !
पीड़ा के आंसू बह आते आँखों से .....
हर्ष के आँसूं भी छलके आँखों से –
ये आँखें समझें दिल का हाल.....
जहाँ शब्द ठहर जाते हैं, वहाँ आँखें समझा देती हैं |
ये आँखों से बहती, दिल की भाषा !

बारिश की मौसम सदा न रहती ....
परन्तु, तुम्हारी मुस्कान सदा बरसती रहती ....
यूँ बरसाते रहना ..... साँई ! अपनी मीठी मुस्कान.....
सदा हम पर | सदा यूँ ही | हर मौसम में |

तू बस जाय मेरे रोम-रोम में !
मेरे खुद से भी ज्यादा ! बस, इतना ही चाहूँ !
मैं इतना ही माँगूं ! इतना भर दे दे ओ मेरे प्रियतम !

मैं, कैसे मनाऊँ ? कैसे रिझाऊँ ?
कैसे समझाऊँ ? अपने मन को कि धीरज के फल मीठे !

व्याकुल मन, व्याकुल प्राण ! होते मेरे, तब-तब
जब-जब भी आती याद, बहुत ही ज्यादा !
क्या ऐसा कभी तुमको भी होता है ?

मेरा अंतर उर मांगे, मेरा पागल मन चाहे – तुझे ही, तुम्हें ही |
तुम्हारे पावन हदय का स्पर्श ! अपनेपन का अहसास |

अपनेपन का अहसास तुम्हें देखकर होता है |
जब देखूँ मैं तुमको, जब सोचूँ मैं तुमको |
अपनेपन का अहसास मिलता मुझको !
क्या ऐसा ही अहसास मिलता तुमको ? सच कहना !

तुम्हारी प्रेमभरी आँखों ने देखा था जब मुझको,
उस दिन - मानों छुआ था मुझको तुम्हारी आँखों ने –
तुम्हारी आँखों में बहती थी श्रद्धा उस दिन –
जो मैंने उस दिन देखा था !
तुम्हारे दिल में उमड़ता भाव जो मैंने देखा था –
शब्द नहीं मिलते मुझे अभिव्यक्ति के !
क्या तुमने भी ऐसा ही कुछ देखा था मुझमें ?
सच कहना !

तुम्हारी श्रद्धा है अडिग तो मंजिल मिलकर ही रहेगी |

तुम्हारी आशा है अमर, विश्वास है मजबूत तो

तुम्हारी चाह पूरी होकर ही रहेगी – आज नहीं तो कल –

वो सभी मिलेगा – जो तुमने चाहा |

थोड़ी धीरज रखना ! वो सभी मिलेगा !

तुम मिल जाओ मुझको बस इतना ही चाहूँ ! ओ मेरे ईश्वर !

दिल में छुपाकर दर्द को मैं हँसता हूँ तेरी खातिर.....

कि लोग तुम्हें अच्छा समझें ! और तुझको मैं भा जाऊँ !

तुम कब समझोगे मुझको ? कि अब तो मिल जाओ....

तुम बिन कौन है मेरा ? मैं किससे कहूँ ?

कहना भी, सहना भी, लिखना भी,

सब कुछ हुआ बहुत मुश्किल |

कुछ तो समझो मेरे दिल का हाल !

सारी हदें पार कर जाती हैं तुम्हारी यादें !
बिना खिड़की दरवाजे के बंद खोपड़ी

में भी बार-बार घुसकर घुमती रहती हैं |

उन्हें समझा सको तो तुम्हीं समझा दो !

कि वे तुम्हें छोड़ मेरे पास न आया करें !

ये कैसा कौतुक है ? मेरी यादें तुम्हारे पास |

तुम्हारी यादें मेरे पास | जीवन की अनमोल यादें –

हमारे मन को भाती हैं | दिल को छूती हैं.....

हमारे अनजाने संबंधो की यात्रा अब तो इतनी आगे बढ़ चुकी है कि

प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचे बिना अब कोई चारा नहीं है |

कभी सोचा न था अनजाने, अनचाहे हमारे ये सम्बन्ध

कभी हमारी जिंदगी बन जायेंगे ! ऐसा लगता है कि हमारे

ये सम्बन्ध अब जिंदगी की आवश्यकता बन चुके हैं |

जैसे नदियों का प्रवाह बहता है सागर की ओर निशदिन.....

वैसे ही मेरे हदय का प्रवाह बहता – तुम्हारी ओर इतना कि

रोक पाना मेरे लिए भी मुश्किल | मुश्किल तो है ही - साथ असंभव भी |

रहस्यमय हैं रिश्ते मेरे-तेरे, इन रिश्तों की पहचान क्या दें -

ये तो अपने दिल से पूछना !

नजरों की भाषा दिल से अच्छी कौन समझे !

क्या सारे रिश्तों को जाहिर करना जरुरी है ?

तब रहने दो वैसे ही जैसा दिल चाहे !

पल-पल बीतें घड़ियाँ तुम्हारी याद में !

क्या कभी पता भी चलता है तुम्हारे दिल को ?

अपने दिल पर रखकर हाथ, जो भी हो अपने दिल में - वो सच कहना !

पदचाप सुनें तो ये लगा कि तुम आए
आवाज किसी का सुना तो लगा कि तुम आए
इंतजार में आँखें मेरी गीली हो आई
हर प्रभात की किरणें बन जैसे तुम आए
हर संध्या के केसरिया रंगों में लगा कि जैसे तुम आए
प्रतीक्षा करती आँखों में आँसू बन जैसे तुम आए
मचलता मेरा मन, लगा कि धड़कन बन तुम आए
होठ मेरे खुले कि जैसे शब्द बन तुम आये
तुम्हारे इंतजार में मेरी आँखें गीली हो आई

३०/०७/२०१४ – ११:५५ pm

हे प्रीतम ! तरसूं निशदिन तव दर्शन को ! चाहूँ तव सहवास !

आँखें बंद करूँ या खोलूँ पाऊँ तव अहसास |

तुझ बिन मेरा जीवन सूना, लगता कारावास |

मेरे दिल कि धड़कन बनकर, तुम करते हो वास |

चाहे कितने दूर दिखो पर रहते मेरे पास |

फिर भी तरसूं तव दर्शन को चाहूँ तव सहवास |

चमके बिजली, गरजे मेघ, पानी बरसे, मेरा मन तरसे |

आँचल में छुपाकर मुझको ले जाओ कहीं दूर, जहाँ कोई ना देखे !

तव प्रेम रस को पाने, मेरा मन तरसे तरसे !

०१/०८/२०१४ – १२: १० am

तुम्हारे आँखों की पलकों पर बिंदु जब देखे

उन बिन्दुओं में प्रेम का सिंधु मुझे दिखे !

वे बिंदु हैं या मोती ! मोती पहले के स्वाति !!

कालू मछली सा मन मेरा, उन बिन्दुओं को चाहे !!

पर मैं तो तुम्हें चाहूँ पाऊँ तुम्हीं को !

तन दूर है तो क्या हुआ ? मन तो बहुत ही पास है |

अपनेपन का इस दिल को सच कहूँ तो अहसास है ||

मेरे मन की यादों में तुम बस गए हो ऐसे |

सुन्दर स्वर्णपत्र पर लिखता हूँ, मेरे मन का हाल.....

तुझ बिन मेरा जीवन सूना है सदा बेहाल.....

चाहूँ तुझको, मांगू तुझको...

गर तू मिल जाए, तो अच्छा होगा मेरा हाल चाल .....

प्यास भी तू, पानी भी तू....

तुझको पाकर ही सार्थक है मेरा जीवन.....

तुमने भी बो दिया है मेरे दिल में अपनेपन का बीज
दुनिया क्या जाने कि मुझको मिल गया मन का मीत

मेरी हो गई मुझसे प्रीत |

मैं तुझमें, तू मुझमें | सदा से थे, हैं, रहेंगे |

हमारा लेन-देन है युगों का, कई जन्मों का |

निश्चितरूप से | तभी तो हम मिले हैं – एक-दूजे से |

और, संवेदनाएं उभरती हैं परस्पर |

वरना, तू कहाँ ? मैं कहाँ ?

कितनी दूरी ! विसंगति और अड़चने !

फिर भी हुई हृदय की नजदीकी |

काश ! मौका आ जाए – एकत्व का !

है तो बस, इसीकी प्रतीक्षा !

कई बार जो मुख से बोलकर समझा पाना कठिन-सा लगता है

उसे लिखकर अभिव्यक्त करना सरल-सा लगता है |

मौन में लिखने में हृदय कुछ अधिक ही अभिव्यक्ति कर जाता है ....

ऐसा महसूस किया है मैंने तो !

युग-युग से प्यासी मरुभूमि ने जैसे सावन का सन्देश पाया
पानी के प्यासे को तकदीर ने जैसे जी भरके अमृत पिलाया
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है, मैं जबसे शरण तेरी आया मेरे राम.....

मुश्किल है |
हो जायेगा |
कठिन है |
हो जायेगा |
असंभव, कहा न –
हो ही जायेगा |
नि:संदेह ! सफलता |

Nothingism is everything .....
Success & possibility
कुछ नहीं में सब कुछ है |
सफलता और संभव सब कुछ |

आपको-हमको, सिर्फ मनचाही चीजों की साकार कल्पना करने की क्षमता विकसित करने की जरुरत है | मानव जाती के इतिहास में आज तक जो भी चीज खोजी और बनाइ गई है वह एक विचार से शुरू हुई थी | उस एक विचार से एक राह बनी और वह चीज अदृश्य से दृश्य में प्रकट हो गई | हम शून्य से शुरुआत कर सकते हैं, क्योंकि शून्य से, बिना राह वाली जगह पर राह बना ली जाएगी |

हम सबके भीतर एक मैग्नेटिक एनर्जी है, मतलब – चुम्बकीय शक्ति | जो हम चाहते हैं, जिसे प्राप्त करना - वह हमारी तरफ आकर्षित होता है |
आकर्षण का नियम सचमुच प्रबलता और सटीकता से काम करता है | इस नियम को समझते ही आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे और आपको इसकी क्षमता व शक्ति का अहसास होने लगेगा |
ब्रह्माण्ड आपकी मनचाही चीजों को आपके पास लाने में भी सहयोग करता है | आप चाहो, मांगो, सोचो और उसे प्राप्त करने की कल्पना करते जाओ | आपकी मांग,

प्रयास स्वतः करवाएगी, और जो आप चाहते हैं स्वयं आकर्षित होकर आपके पास आयेगा |

I love my self.

N

You love your self

क्योंकि

जो व्यक्ति स्वयं को प्रेम नहीं करता वह दूसरे को भी जब प्रेम करता है तो वह अधिकतर ढोंग होता है, सच्चा प्यार नहीं | जो जितना स्वयं को प्रेम कर सकता है वह उतना ही सच्चाई व ईमानदारी से दूसरे को प्रेम करेगा |

०८/०९/२०१४ – ६:५५ am

अभी दो पन्ने पहले ही जिस आकर्षण के सिद्धांत के बारे में लिखा है कि जिसे तुम सोचते हो – वह आकर्षित होता है तुम्हारी ओर | कल बुधवार था | सप्ताह में एक ही दिन २५ मिनट मुलाकात की व्यवस्था होती है | हर बुधवार शाम ५:१५ से ६.०० के बीच कभी भी, मुलाकात होती है | जिन्हें याद किया था – रजतभाई – रायपुर, सतीशभाई – राजकोट आदि वे आये – मिले | जबकि मैं तो पिछले नौ महीनों से हूँ |

अतः मानना पड़ेगा कि तुम जिसे सोचते हो, याद करते हो, जिसका चिंतन करते हो – वह तुम्हारी ओर आकर्षित होता है | तुम्हारे भीतर एक चुम्बकीय शक्ति है – ब्रह्माण्ड से वह संभाव्य तुम्हारी तरफ खींचकर आता है – जिसे तुम चाहते हो !

११/०९/२०१४ सुबह – ५:५५

सामान्य, अति सामान्य, बातों में भी आनंद लेने की आदत डालो | खिल-खिलाकर मुस्कुराओ – हँसों तन-मन को ताजगी से भर दो | ८/९/२०१४ को सुबह - झीजल कैसे चिल्ला-चिल्लाकर गाता था – 'आनंद त मोटेरा में – बे हंद उंधय जो तरो |' की नकल उदय, भद्रेश के सामने करके खूब हँसा– हँसाया |

वो चन्द्र होटल वाला – 'नंदीय किनारे बाँवरा.... वेठो बंसरी वझाए,

गायूं मायूं गड करे वेठो रास रचाए,

एहेड़ो बाझारो आहे – कि खाली कहेखे कोन छड़े –

लाल गुलाबी साडी पाये, नचंदी टुपन्दी अचां

पेरन में छम-छम घुंघरू पाये नचंदी टुपन्दी अचां –

११/०९/२०१४ – ६:०० am

कई वर्षों पहले साबरमती नदी के तट पर घूमते बापू के सामने वह होटलवाला जिसकी होटल ONGC तिराहे पर पेट्रोल पंप से सटकर थी – उसको नाचते – गुनगुनाते – सहज में ऐसा गाते देखकर तो मैं भी विस्मित हो उठा था और रोमांचित, आनंदित हो उठा था | हाँ, ये दृश्य मैंने कुछ एक-दो बार ही देखा पर ये इतना प्रफुल्लित कर देनेवाला था कि वह आज तक स्मृतिपटल पर उभरता है और आनंदित करता है |

ये जरुरी है कि ऐसी बातें – जो तुम्हें आनंदित करती हैं – याद करते रहना चाहिए ताकि तनाव-उदासी और गमगीनी में तुम डूबने से बचे रहो |

हमारे द्वारा एक-दूसरे को प्रदान की हुई ऐसी बहुत से यादें हैं जो कभी भुलाई नहीं जा सकती | हम उस भाषा को समझने वाले हैं जो हदय की भाषा है, जिसमें शब्दों की भी जरुरत नहीं रहती.... ऐसा बहुत बार हुआ है, मैंने देखा और अनुभव किया है |

हमारे हदय एक-दूसरे को समझें तथा हदय के भावों का महत्त्व हम समझें और एक-दूसरे के उन अमूल्य भावों की पूर्ति करने में हम सहयोगी बने तो कितना अच्छा हो ?

मुझे इस बात की अत्यंत ख़ुशी है कि ऐसे विपरीत समय में भी हमारे सम्बन्ध बने हुए हैं | क्योंकि वो मजबूत हैं, स्थाई हैं और सच्चे हैं | इस बात को स्वीकार किये बगैर छुटकारा नहीं है |

तुम्हारी उदास आँखों को देखकर आँखें गीली हो जाय यही प्यार है |

तुम्हारे चेहरे का रंग निस्तेज हो जाय और मन मेरा खिजाय, वो ही हमराज है |

मैं चलकर रस्ता काटूँ और मंजिल तुम्हें मिल जाय, ये ही सौगात है |

तुम कुछ भी न बोलो और मैं समझ जाऊँ यही अहसास है |

तुम्हें सामने न बिठाकर तुम्हारी तस्वीर बनाऊँ, यही नजर का दीदार है |

प्यार है, ये शब्द सुना है, इस जहान में भी कोई समझ पाया कि ये प्यार क्या है ?
दुनिया में प्रेमी जुदा हो जाय फिर भी हदय याद करे हर पल,
यही हमारी एक-दूसरे को दी हुई चाह है |

मनुष्य जब संबंधों में गिनती करना शुरू करता है, तब कई बार उसे खुद भी महसूस नहीं होता इस प्रकार से वह धीरे-धीरे बंधे हुए और संभाले हुए संबंधों से दूर होने लगता है |

क्या हम बिना हिसाब-किताब का बिना आशा-अपेक्षा के बालवत प्रेम के अंकुर को बो सकते हैं - अपने हदय में ? जिसमें बाउन्डेशन न हो, जो आत्मीयता के फाउंडेशन में खड़े किये गए हों | ऐसे – संबंधों को जब हम जारी रखते हैं तब वे स्थाई होते हैं |

आओ, हम – गठबंधन बनायें प्रेम का !
डावांडोल हुए बिना !
खोल दें प्रेम का मोर्चा
गठबंधन बनाएँ दुनिया में, हम प्रेम का !!

थिरकते चलो.....
नृत्य करते चलो .....
गुनगुनाते चलो
प्रेम बाँटते चलो.....
साथ देते चलो,
साथ लेते चलो.....
प्रेमगंगा को दिल से
बहाते चलो .....

अतृप्त लालसा, दिव्य मिलन की पूर्ण करने,

सहज प्रयास जीवन का पुरुषार्थ बना –
कब, कैसे ? इसका पता न चला |
अब तक भी | हाँ, यह दिव्य प्रेम है !

- उन आल्हादक पलों को - क्षणों को कैसे भूल सकते हैं, जिसमें हमारा सह-अस्तित्व चमकता है.... उन स्मृतियों को जीवनभर के स्मृतिकोष में इस तरह जमा किया है कि, उसे खर्च करने का नहीं अपितु बढ़ाने का भाव ही अक्सर पैदा होता रहता है | कुल मिलाकर भूल जाना तो संभव ही नहीं है |

- जीवन में एकांतरूपी अंधकार में यादों का प्रकाश छाया रहता है, जो रात को, पूर्णिमा की चांदनी की तरह उज्जवल और मनमोहक बनाता है |

- हरगिज उन अनमोल और बेहतरीन क्षणों को भूल पाना मुश्किल ही नहीं असंभव सा है, जिसमें साथ और पास का अहसास अत्यंत गहरा होता है हमारा |

एक साथ चले,

एक साथ जियें,

एक साथ बढ़ें,

एक साथ मिलें

मजबूती से प्रगाढ़ता से –
आत्मीयता से तन्मयता से
एकात्मता से आगे बढ़ें |

बस ख्वाहिश रहे - तमन्ना रही रहेगी
साथ-साथ, साथ-साथ हो, रहे - तेरा मेरा
आनंदपूर्ण जिंदगी के लिए | सदा सदा के लिए !
साथ हो | साथ था, है - ऐसे ही साथ बना रहे - सदा के लिए।

- हमारे संबंधों की घनिष्ठता को दुनिया की कोई ताकत ना तोड़ सके - ना कमजोर कर सके बल्कि ये मजबूताई की ओर अग्रसर हो - यह मांग है - ख्वाहिश है मेरी |

- लोग सुख के लिए क्या-क्या नहीं करते - न जाने कितनी कष्टप्रद यातनायें सहते हैं - हमने तो सुख के लिए आत्मीय आनंद का, स्नेह प्रेम का और अथाह अपार अपनत्व की कशिश का मार्ग चुना है और आंशिक ही सही पर सफलता पाई है.....

बस, इसी तरह इस मार्ग पर हम आजीवन प्रतिबद्धता के साथ चलने का ठान लेंगे तो दुनिया की कोई ताकत फिर न हमें डिगा सकेगी न दूर कर सकेगी | हमने उस अमरफल की बेल का बीज बोया है जो जन्मों-जन्मों तक चलती है और फलों को साथ-साथ खाने के लिए हमें हर जन्म में मिलाती है और एक दूसरे के हदय में शाश्वत प्रेम के अंकुर अनायास पैदा करती है |

- कहीं भी रहे- मेरे साथ रहना-

कभी भी, कभी भी, मुझे ना भुलाना ना छोड़ना –

बस, पकड़े रहना हदय से.... सदा इसी तरह

इतने में सब आ गया

हो सकता है कि समय परिस्थिति व संयोगो की मजबूरी आती है कई बार - पर इस संकल्प की - दृढ़ता में कोई कमी न रहे कि जीवन में सदा यूँ ही साथ हम - जैसे हैं - और आगे भी वैसे ही रहेंगे...
अथाह – असीम - बेपनाह आनंद को परस्पर पाया करेंगे.....!

- मेरे साथ बिताई हुई जिंदगी की वे अनमोल क्षणें - पलें - केवल उस दिन तक ही सीमित नहीं - यह तो वह अनमोल यादगार पलें हैं जो रोमांचकारी है और आजीवन वे यादें बुद्धि के खास स्मृतिकोष में जमा रहती हैं और सुकून देती हैं |

- होंगे, बेशक बंद आंखो से सपने देखने वाले.....

पर मैं तो खुली आंखों से तेरे/तुम्हारे सपने देखा करता हूँ....

अपने विवाह के लिए रंगीन सपने हरेक युवती लगभग देखा करती है | उसे पसंद आए इस तरह के सभी गुण वह सपने में अपने भावी पति राजकुमार

में हों ऐसी आशा-अपेक्षा रखती है | यह उसका एक प्रकार का काल्पनिक संसार ही होता है जो यथार्थता में पूरी तरह सत्य नहीं हो पाता |

किसी स्त्री का पति आकर्षक या प्रभावशाली हो तो कितनी ही युवतियाँ अपने सपनों के राजकुमार को उस छबि में देखने का प्रयत्न करती है और अपने पति में उन्हीं गुणों की अपेक्षा करती है | और वो पूरी न होने पर झगड़ा होता है |

आत्मसम्मान से जीनेवाला कोई भी व्यक्ति कभी भी किसी की कार्बन कॉपी बनने के लिए तैयार नहीं होता | ऐसा करने पर उन अपेक्षाओं के लिए दबाव देने पर परस्पर संबंधों में कड़वाहट पैदा होती है |

किसी भी स्त्री के पति के साथ तुलना करके पति की आलोचना करनेवाली पत्नी सांसारिक प्रेम के जड़ों को कमजोर बना देती है | पति को लगता है कि पत्नी उसे पसंद नहीं करती | वो खुद को अपमानित समझता है | ऐसी मनःस्थिति प्रेम या रोमांस को नहीं बल्कि चिढ़, गुस्सा और नफरत को जन्म देती है |

अपने आंतरिक प्रेम की जड़ें मजबूत होनी चाहिए | कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति अपने बीच कभी मनमुटाव को जन्म न दे सके | अपने हार्दिक आत्मीय स्नेह, विश्वास को ढीला न करे ऐसी इच्छा करता हूँ |

भले, कैसी भी मुश्किलियों का हमको सामना करना पड़े, पर हर परिस्थिति में हम एक दुसरे के साथ तालमेल बैठाना सीखें और नासमझी को दूर करते रहें | सम्बंधो में पड़नेवाली दरार को कम करने का प्रयत्न करते रहें | महत्त्व की बात यह है कि कुछ भी हो जाय अपने प्रेमपूर्ण सम्बन्ध स्थाई बने रहने ही चाहिए | हमारे प्रयत्नों द्वारा यह संभव है |

तुम्हारी भरपूर नज़र मेरे चेहरे पर कितनी देर स्थिर रहती है यह गिनना मेरे लिए असंभव है | तेजस्वी, शांत, और सौम्य तुम्हारे चेहरे की छाप मेरे में इस तरह अंकित हो गई है कि वो कभी भी निकल नहीं सकती, ये बात निश्चित है |

मेरे स्मरण, चिंतन, मेरे साथ की वो यादें
तुम्हारे अकेलेपन को मजबूत आधार देती होंगी ऐसा मुझे लगता है |
जैसे कि तेरे साथ मेरी मानसिक उपस्थिति
तुझे पुष्ट करती होगी ऐसा मुझे लगता है |
मैं तुम्हारे जीवन की बैंक को अपने लिए २४ घंटे खुल्ली देख रहा हूँ |

जिसमें मैं अपने अमूल्य समय के साथ हदय की संवेदनाओं को इन्वेस्ट कर सकता हूँ | मुझे लगता है कि हम दोनों प्रेम के इन्वेस्टर हैं और संवेदनाओं के भागीदार हैं |

हमारे अधिकांश प्रश्न हमारे अपने मन के कमजोर, गलत अनुमानों, भविष्य के संभवित भय आदि के कारण जन्म लेते हैं | इन सबसे पर हो जाओ, तब सुख नाम का प्रदेश शुरू होता है | बस इतना समझने से अपने बीच के संबंधो से जुड़े सभी प्रश्नों का निराकरण हो सकता है | साइक्लोजिकली हिम्मत रखने की जरुरत है | अक्सर हमारा काल्पनिक भय हमारे भविष्य को विकराल बना देता हैं, इसलिए तू मजबूत बन, हिम्मत रख और अपने बीच के आत्मीय हार्दिक प्रेम को मजबूत कर |

१६/१०/२०१४

बहुत से लोगों को हर बात में संदेह करने की आदत होती है | सीधी और सरल लगनेवाली तमाम बातों में शंका होती रहती है | ऐसे संदेह्वादियों के लिए जीवन जीना सचमुख मुश्किल है | उनकी जिंदगी अविश्वास और शंका के जाल में ही टिकी रहती है | जीवन में जो संदेह करता है वो कभी कुछ नहीं कर सकता |

अगर अच्छा व्यक्ति बनना हो या अच्छा लीडर बनना हो तो हमको अपने ऊपर, अपनी टीम पर विश्वास रखकर आगे बढ़ना चाहिए |

Learning By Trial & Error
It's The Most Common Type Of Learning.

- तुम्हारे पत्र मुझे तुम्हारे अथाह प्रेम का अहसास कराते हैं |
- तुमने भेजा पत्र तुम्हारी मेरे प्रति की चाहना को अभिव्यक्त कर रहा है | अतः उसे बार-बार देखने का मन करता है |
- तुम्हारे पत्रों में तुम्हारा प्रेम छलकता देख रहा हूँ.....
- मेरा यह कर्तव्य है कि प्रशंसकों द्वारा भेजे गए स्नेह को मुझे जतनपूर्वक संभालकर रखना होगा |

- मुझे बहुत अच्छा लगता है जब कोई अपने मन के विचारों को मेरे समक्ष निखालस्ता से पेश करता है | उन विचारों में कुछ ऐसा तत्त्व रहता है जिसमें पूर्वाग्रह का अंशमात्र भी नहीं रहता |

- मैं मानता हूँ कि सत्यनिष्ठा बिना की सिर्फ तार्किक, बाल की खाल निकालने वाली बुद्धिनिष्ठा कई उपद्रव पैदा करती है | असत्य की गहराइयों में छुपी ऐसी बुद्धिखोर मानसिकता के कारण ही 'सेक्युलरिझम' जैसा शब्द बदनाम हुआ | विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का मैं सदैव स्वागत करता रहा हूँ|

लोकतंत्र में बनती सुंदर घटना कौन सी ?
"द्वेष रहित असम्मति यह लोकतंत्र की सही शोभा है |
Let us agree to disagree without being disagreeable
खुला मन पवित्रता का मंदिर है

आजकल सभी को ऑनलाइन रहने की आदत-सी पड़ती जा रही है - जमाना सेल्फी का है 3G का है एप्लीकेशंस और डाउनलोड का है | लेकिन जैसा सनेत्र, सहृदय प्रत्यक्ष दर्शन व बातचीत का अहसास भले 4G क्या 6 या 7G आ जाए तब भी वैसा एहसास होना मुश्किल है |

मैं कहता हूँ ऑनलाइन रहो न रहो हृदय से भाव लाइन चालू रखो - और उन मधुर यादों को डाउनलोड करते रहो जिसमें हमारा अस्तित्व हो....

टेक्नोलॉजी आज के जमाने में जरूरी है पर हार्टोलॉजी की मेरी बात में भी दम है | वर्चुअल दुनिया से थोड़ा बाहर आकर मेरी स्पिरिचुअल दुनिया से कनेक्टेड होइए | तब फुल हैप्पीनेस का ऑलटाइम नेटवर्क मिलेगा जिसमें बैटरी रिचार्ज करने की कोई झंझट नहीं है | कभी तुम डिस्कनेट ही नहीं होंगे तो रीकनेक्ट होने का टेंशन नहीं है | आश्चर्य तो इस बात का है कि ऑफलाइन में भी 'शेर' कर सकोगे और बिना क्लिक सेल्फी के मजे लेते रहोगे | सोशल साइट्स के बिना ही मैं तुम्हें तुम्हारे लाइफ राइट्स को देता हूँ कि तुम गॉड साइट्स से हरदम कनेक्टेड रहोगे –

२२/१०/२०१४ प्रातः ५:५०

मम् हृदय कुञ्ज निवास कुरु

तुलसीदासजी द्वारा विरचित श्री रामचंद्र कृपालु भजमन - स्तुति के अंतिम भाग में यह कहा है | इस बात में बड़ा दम है |

भगवान सदा हृदय कुञ्ज में निवास करते हैं ताकि अन्य विकार प्रवेश न कर सकें | हमारा हृदयरुपी घर खाली न रहे – खाली घर में डाकू घुस जायेंगे |

ईश्वर से प्रार्थना किया करो कि हमारे जीवन का रोमांचक सफर इसी तरह जारी रहे ! श्रेष्ठ मित्रों से अधिक सुखदाई कोई नहीं होता ! हमारी श्रेष्ठ मित्रता निराशा, हताशा, मायूसी को चीरकर हमारे जीवन को आशा उत्साह से भरती रहे - प्रेम की मधुरता का अहसास कराती रहे - सदा यूँ ही हम ज्ञान-भक्ति-प्रेम- योग-सेवा और ध्यान को केंद्र में रखते हुए येनकेन-प्रकारेण बातचीत को, संवादिता को बरकरार रखें | तमाम आघातों, अवरोधों को दरकिनार करते हुए हमारे अलौकिक, शाश्वत, आध्यात्मिक रिश्ते पुष्ट होते रहें - ऐसी स्वाभाविक चाह स्फुरित हो रही है ! सहज में !

२२/१०/२०१४

हम एक-दूसरे को स्पेस देते रहें | आधिपत्य और अतिक्रमण छोड़कर सिर्फ प्रेम और प्रियपात्र की खुशी में अपनी खुशी मिला दें | कितना अच्छा हो ! हमारा साथ होना पर्याप्त नहीं है - साथ होने के अलावा साथ जीना महत्त्वपूर्ण है | विदाउट रिएक्शन के हैप्पी रहते हुए, बिना कंप्लेंट के हम परस्पर एक दूसरे को खुशी देते रहें तो कितना अच्छा !

हर मनुष्य के पास जिंदगी एक होती है परंतु वह दो जिंदगी जीता है | एक जिंदगी वह जो वो हकीकत में जीता है और दूसरी जिंदगी वो जिसके बारे में सोचता रहता है |

अपनी इच्छा, विचार और सोच, ख्वाब, कल्पना के अनुसार जिंदगी बहुत कम लोग जी पाते हैं |

आज जो जिंदगी आप जी रहे हो वैसे जिंदगी तुम्हारी कल्पनाओं के मुताबिक की है ? इस पर विचार करें और जो अनावश्यक हो उसे हटा दें - मैं तुम्हें तुम्हारे विचारों के अनुसार जिंदगी जीने में सहयोगी अगर हो सकता हूँ तो मेरा सहयोग लें |

तुम्हारे अंतर में चलनेवाले तमाम द्वंद्वों को निपटाने के लिए मैं हूँ न ! क्यों फ़िक्र करते हो ? सारे हल निकाल लिए जाएंगे | तुम मेरे साथ मिलकर जीवन के शाश्वत समाधान तक पहुँचोगे ऐसी उम्मीद रखते हुए आजीवन प्रयास करते रहना होगा |

२४/१०/२०१४

हरदम विरह से झुलसते हुए हृदय को विश्रांति चाहिए ?
अपने मन की बेचैनी को मिटाने का कोई उपाय चाहिए ?
अगर हाँ, तो मुझे याद करो |
तुम कहो कि याद से तो बेचैनी और तड़प की पीड़ा और बढ़ती है –
तो बताना मुझे मेरे पास कोई और फॉर्मूला है तो बताता हूँ |
आपसे मिले हुए अनहद प्यार और आदर का अखूट, अमूल्य ऐश्वर्य है मेरे पास.....
मैं अपने को इसके
लिए खुशनसीब समझता हूँ | इसके लिए मैं तो ऋणी हूँ ही आपका !
- नारायण साँई

शरीर की एक भाषा होती है जिसे हमलोग बॉडी लैंग्वेज कहते हैं, लेकिन आंखों की भाषा तो निराली है जो समग्र बॉडी लैंग्वेज को खास अर्थ देकर निखारती है | संवेदनाओ का एक्सरे है आंखें ! हृदय के उमड़ते उफनते भावों को अभिव्यक्त करने में वाणी से अधिक आंखें कामयाब होती हैं | जिव्हा और शब्द - वाणी और भाषा जहाँ ठहर जाती है वहाँ आंखों की भाषा बहुत कुछ समझा देती है | तुम जब देखते हो मेरी आंखों में और मैं जब देखता हूँ तुम्हारी आंखों में तब एक अनोखा विश्व निर्मित हो जाता है |

कितना SPEEDLY हमारी रुचियाँ, हमारे शौक, हमारी इच्छाएं बदलती जाती हैं.....

कितना तेजी से हम भूलते जाते हैं बातों को कभी महत्वपूर्ण लगनेवाली बातें समय बीतने के साथ नगण्य-सी लगती हैं | लोगों को, घटनाओं को कितना जल्दी कई बार हम भूल जाते हैं.....

कितना जल्दी भूतकाल की स्मृतियों पर वर्तमान का आवरण चढ़ता ही चला जाता है..... है न ?

यही तो जिंदगी है..... कितना इसमें चेंज है..... जिंदगी के रंगों से हम भी न जाने कितनी बार चेंज होते रहते हैं | शायद ही कोई बचा हो इस चेंजिंग से !

मैं देखता हूँ आसमां में चमकते तारों को तो
लगता है मेरे हृदय में उमड़नेवाले विलक्षण भावों का - प्रेम का आनंद का शांति-सुख-माधुर्य का मानो
ये सितारे रिफ्लेक्शन हैं.....
मेरे भीतर छिपे हुए सत्य का रिफ्लेक्शन है.....

प्रेम - मेरी हॉटलाइन है - मेरी लाइफ लाइन है.....
शरीर के बिना मैं शायद रह सकता हूँ
पर प्रेम के बिना रहना मेरे लिए बेहद मुश्किल है |
मेरा मिजाज है 'प्रेम'
मेरा जीवन है 'प्रेम'
मेरा आधार है 'प्रेम'
और मेरा धर्म भी है 'प्रेम' |
मैं मानता हूँ कि 'प्रेम' के सिवा धर्म भी जिंदा नहीं रह सकता |
दृष्टि बिना की आँख, आवाज बिना का गला, धड़कन रहित हृदय जैसे बेकार है
ठीक वैसे ही मैं प्रेम के बिना भी अपने को बेकार ही समझता हूँ –
बिना प्रेम के जीवन की सार्थकता कैसी ?
अतः मैं बेपनाह, अथाह, असीम प्रेम से अपने हृदय को परिपूर्ण करना चाहता हूँ -
प्रेम को बढ़ाना और फैलाना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है – और इसीमें जीवन की सार्थकता है –
मैं प्रेमपूर्ण विश्व की कल्पनाओं में ऐसे खो जाता हूँ और देखता हूँ कि उस विश्व में हिंसा, द्वेष, इर्ष्या और अभिमान को कहीं कोई स्थान नहीं है |
क्या हम सभी मिलकर एक ऐसे प्रेम विश्व के निर्माण का प्रयास नहीं कर सकते ?

मेरे भीतर एक कलाकार जिंदा है एक तत्त्वचिंतक, फिलॉसॉफर, एक गीतकार,
एक कवि, एक लेखक, एक अनोखा विश्वप्रेमी....
ये सभी मेरे भीतर सोते-जागते रहते हैं..... अपना-अपना रंग दिखाते हैं
यह सभी मिलकर मुझमें समाए और एक हो गए हैं.....
यह अनुभूति बड़ी विलक्षण है..... जिसमें मैं स्वयं से ही आकर्षित, स्वयं से ही आनंदित होता रहता हूँ और अपने आप से ही बेहद प्रेम करने लगता हूँ –

तुम सामने आते हो जब मेरे –
तो मेरे उसी प्रेम का झरना
तुम्हारी ओर फूट पड़ता है.....
गंगा-यमुना की नाई हमारे प्रेम की नदी का संगम
होने की घटना घटित होती है.....

परमात्मा को मानव तब खोजता है जब वो अशांत होता है ! यह हकीकत है कि जहाँ प्रेम का अस्तित्व है - प्रेम की लेन देन है - प्रेम की सरस रसमयता है, वहाँ अशांति को स्थान कहाँ ? जहाँ प्रेम है वहाँ अशांति संभव नहीं | एक कदम और आगे की बात कहूँ तो यह है कि –

विशुद्ध प्रेम ही परमात्मा है |'

अतः अपने हृदय को प्रेम से ओत-प्रोत कर लें तो हमारा प्रेमपूर्ण हृदय ही परमात्मा का मंदिर बन जाएगा | तो चलो, आओ हम अपने हृदय को अनहद, अपार, अथाह प्रेम से परिपूर्ण कर लें फिर परमात्मा को खोजने की जरुरत नहीं पड़ेगी ! क्योंकि जहाँ प्रेम है वहाँ परमात्मा है | प्रेम को पाओ, प्रेम को भर लो, प्रेम से जियो, प्रेम से मिलो, प्रेम से बात करो, प्रेम से देखो..... जीवन में प्रेम ही प्रेम को बस जाने दो | प्रेम के गीत गुनगुनाओ | प्रेम धर्म को अपनाओ और देखो जीवन का असली मजा !

- नारायण साँई

मुझसे दूर होने की जिद ना करो, अपने आँचल से मुझको चिपकाए रखो –
हम बिछड़े कभी ना मन से यूँ ही जीवन के सफर में साथ रहे सदा –
जब तन से संभव न हो सके, तब मन से मेरे साथ रहो –
मेरी यादों के साए में, मेरे ख्यालों - में मेरे ख्वाबों - में रहो - जितना भी रह सको.....
तब देखोगे समय खुशीयों से भर जाएगा भरपूर आनंद व प्रेम की दुनिया में खो जायेगा जो वास्तविकता से भी अधिक अच्छी और कल्पनाओं की दुनिया होती है –
बड़ी अद्भुत ! बड़ी विलक्षण !!!

उत्कट अभिलाषा - मेरे मन की.....
तीव्र होकर.... बढ़ती जाती - तुझसे मिलने की !
जाने कब होगा तुझसे मिलना.....
जिसमें फिर ना डर होगा बिछड़ने का !!
ऐसा नित्य मिलन चाहे मेरा मन !!!

क्या हम बिना अपेक्षा, बिना चाह, बिना मतलब,
बिना आकांक्षा के एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं ?
ऐसे प्रेम को निभा सकते हैं जीवनभर ?
अगर हाँ - तो हमारा प्रेम निराला होगा, अभिनंदनीय होगा,
आदर्श होगा, अनुकरणीय होगा, उसका देर सवेर स्वागत होगा |

- अविस्मरणीय है तुमसे मिलने का आह्लाद
- तुम आओ तो, मैं सारे द्वार खोल दूँ.....
- संगठित न होने का कोई कारण नहीं.....

आओ, हम अब दुनिया में प्रेमवाद फैलाएँ....
स्वयं जुड़े, जोड़ें सबको, जीवन खुशहाल बनाएँ.....

- टकराती हैं जब लहरें किनारों से, तब सुंदर लगती हैं....

तुम सीखो इन किनारों से, आने दो लहरों को, बन जाओ तुम भी किनारे

इन मुसीबतों की लहरों को आने दो... बढ़ने दो तुम्हारी सुंदरता को....

आएँगी तुमसे टकराकर लौटेंगी

मुसीबतों रूपी लहरें तुम्हारी सुंदरता को बढ़ाएँगी

मोहक तुम, रोचक तुम, प्रेम धर्म में, प्रेमवाद के हो आराधक

तुम विस्तारक हो तुम –

प्रेमाकार दुनिया के सृजन के लिए मैं आपका स्वागत करता हूँ .....
सुखद वर्तमान व आनंदित भविष्य के लिए.....
आतंकवाद को प्रेमवाद से हराना होगा
द्वेष-वैर-नफरत की जड़ों को उखाड़ना होगा |
संगठित हों – करें कोशिश, आओ साथ चलें,
प्रेम मोहब्बत से आओ, हम दुनियाँ बदलें ||

जो भी हैं पीड़ित, वंचित, शोषित
उन सब को जरूरत है आपके प्रेम की !
चलो, तुम प्रेम बाँटों..... प्रेम लुटाओ.....
दुनिया को भर दो प्रेम से.... लबालब प्रेम से....
अपने दिल को प्रेम से भरकर, बाँटों जग में प्रेम को !!
दूर करो नफरत अब सारी !
जो भी सम्मुख आए आपके, तुम देखो अपने आपको |

जाए नजरें जहाँ भी तुम्हारी, तुम देखो अपने आपको ||
छालोछल भर लो दिल को अपने लबालब प्रेम से !
उभरने दो, उफ्फनने दो... छलकने दो दिल को प्रेम से !
मैं, सक्रियता को चाहता हूँ आपकी,
प्रेमवाद फैलाने को इस दुनिया में !!
सब धर्मों को छोड़कर प्रेम धर्म अपनाओ,
सब धर्मों से वैर छोड़कर प्रेम धर्म फैलाओ ||

तेरे आँचल में छुपा लूँ.... मुखड़ा मेरा, तू ले चल मुझको दूर

मैं बालकवत खेलूं तेरी गोद में !
प्रेम की पराकाष्ठा में मन, एकांत सहज ही चाहे.....

साहचर्य के सुख में नि:शब्दता छा जाए.....
विरह मिलन की गहराई में द्वैतभाव मिट जाए.....

मैं तुझसे मिलना चाहूँ.....

तुझ तक आना चाहूँ....

गर मुझको पंख मिल जाते....

मैं शौकीन हूँ.... तेरी मनमोहक अदाओं का ! नूरानी नजरों का !!

अंकुर फूट पड़ा है मेरे दिल में तेरे दिव्य प्रेम का.....

जो मस्ती आंखों में है वह सुरालय में कहाँ ?
अमीरी किसी दिल की, महालय में होती कहाँ ?
शीतलता को प्राप्त करने मनुष्य कहाँ नहीं दौड़ता !
जो है माता की गोद में वह हिमालय में मिलता कहाँ ?

आपका क्या शुक्रिया करूँ ? इतनी मेरी जुर्रत नहीं
एक बूंद पानी का हूँ मैं, आप जैसा दरिया नहीं |

स्नेह समर्पण मांगता है, माँ के त्याग की बलिहारी है |

सुख को छलकाया नहीं, दुःख को दिखाया नहीं
पुष्पों को बिछाया प्रेम से जिसने तुम्हारी राह पर
उस राहबर की राह पर काँटे कभी बनना नहीं |

तुझे देखा तो श्वास भीतर आकर मानो अटक सा गया !
धड़कन का भी भास न हुआ कि वह चल रही है या नहीं !!

सचमुच हमारे बीच अगर उत्कट प्रेम है
तो, हमारे बीच के परदे भी दो दिन ही रहेंगे |

उदासी देखि नहीं, बस उमंग देख लिया
नहीं देखा किसी ने दरिया, बस तरंग देख लिया

यहाँ आई हूँ केवल गाने प्रभु तुम्हारा गान |
मुझे दे दो भरी सभा में एक छोटा सा स्थान ||

जनम-जनम तक मिलता रहे आपके चरणों में स्थान |
दे दो गुरुवर मुझको ये ही अभय वरदान ||

हे इश्वर ! मुझे शक्ति देते रहना,
भले कोई भी दूर हो मुझसे, कोई चाहनेवाला मानव
पर उसके अंतर की पुकार, मैं दूर रहकर भी सुनता रहूँ ||

'ओहम्मो'

- नारायण साँई

प्रेम न खेतों उपजे,
प्रेम न हाट बिकाए
राजा चहों प्रजा चहों,
शीश दिए ले जाए ॥

अल्होमिस्टको